International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

राजाभोजकृत ''श्रृंगारप्रकाश''–नाट्यशास्त्र में श्रृंगार रसरूपी विधाओं के प्रस्तुतीकरण का वर्णन
राजा भोज द्वारा वर्णित ''श्रृंगार रस'' तथा भरतमुनि द्वारा वर्णित ''श्रृंगार रस'' नाट्यशास्त्रों में तुलनात्मकता संबंधी तथ्यों पर आधारित अध्ययन

दीपक गायकवाड़

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर पी.एच.डी. शोधार्थी (इतिहास संकाय)

प्रस्तुत शोध पत्र में परमारवंशी प्रतापी राजा भोजदेव परमार द्वारा रचित ''श्रृंगारप्रकाश'' ग्रंथ में श्रृंगार रस के विस्तृत वर्णन संबंधी तथ्यों को भरत मुनि द्वारा समान विषय पर प्रस्तुत तथ्यों से तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया हैं।

परमारवंशी संस्कृत विद्वान राजा भोज द्वारा संस्कृत काव्य एवं नाट्यशास्त्र की विभिन्न विधाओं के प्रदर्शन के लिए श्रृंगारप्रकाश नामक ग्रंथ की रचना की गई। इस ग्रंथ में उन्होंने 8 रसों में से मुख्यतः श्रृंगार रस का वर्णन बड़े ही विस्तृत रूप से किया हैं, इसके विभिन्न प्रकारों का अधिक विषयवस्तु एवं सारगर्भित प्रदर्शन इस ग्रंथ को श्रृंगाररस के समस्त विधाओं में उपयोग की परिपूर्णता को दर्शाता हैं। इस ग्रंथ में भोज कहते हैं कि, पृथ्वी पर किसी अन्य रस का इतना व्यापक विस्तार नहीं हैं, जितना कि श्रृंगार का। श्रृंगार अन्य सभी भावनाओं और संवेदनाओं से ऊपर हैं, क्योंकि यह मनुष्य में सबसे महत्वपूर्ण भावना है। यह मानव मन को आकर्षित करता हैं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मौजुद हैं, क्योंकि जीवन प्रेम और स्नेह की कभी न खत्म होने वाली खोज हैं। यह अत्यंत मधुर हैं।

श्रृंगार के विभिन्न पहलुओं को समझाते हुए भोज कहते हैं कि, जैसे एक मॉ और एक बच्चे के बीच प्रेम, भाई–बहनों के बीच प्रेम, दोस्तो के बीच प्रेम, एक पुरूष और महिला के बीच प्रेम, सर्वशक्तिमान और भक्त के बीच प्रेम इन सभी में प्रेम के प्रदर्शन का मुल आधार श्रृंगार ही हैं, न कि कोई और।

भोज का यह ग्रंथ अन्य ग्रंथो सरस्वतीकण्ठाभरण से भिन्न हैं। इसमें श्रृंगार प्रकाश नाम का महत्व इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह अहमकारा एवं अभिमन संबंधो में श्रृंगाररस के प्रदर्शन एवं प्रस्तुतिकरण का वर्णन प्रदर्शित करता हैं। श्रृंगारप्रकाष 36 अध्यायों में विस्तृत हैं, जिसमें अध्याय 1 में रस के बारे में वर्णन करते हुए बताया गया हैं कि 'गुण सबसे बड़ा तत्व' हैं, इस प्रकार पुरूषों को रसिक कहॉ जाता हैं अध्याय 1 से 6 की अधिकांश सामग्री व्याकरण, शब्द, भाव और सहित्य से संबंधित हैं।

अध्याय 7 एवं 8 शब्द और अर्थ के मध्य संबंधो को समझाता हैं एवं साहित्य को शब्द और अर्थ में विभाजित करके परिभाषित करता हैं।

अध्याय 9 में साहित्य के साथ काव्यात्मक संबंधों का भी वर्णन किया गया हैं।

अध्याय 10 मुख्य रूप से विभिन्न प्रकार के अलंकारों के प्रदर्शन के बारे में विस्तृत विषवस्तु प्रस्तुत करता हैं।

अध्याय 11 जो इस ग्रंथ का मुल हैं, में विभिन्न रसों को वर्णन किया गया हैं जिसमें मुख्यतः श्रृंगाररस का वर्णन महत्वपूर्ण एवं अपने प्रकारों में एकमात्र हैं। इसमें श्रृंगार रस का वर्णन इतना प्रभावशाली ढंग से किया गया हैं जैसे मानो और कोई रस मौजुद ही न हो। उदाहरणतयाः कवि को कविता काव्य प्रस्तुति के दौरान अलंकारों के उपयोग में श्रृंगार रस का अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि यही काव्य की सुंदरता का प्रमुख कारण हैं, इसके अभाव में सभी सुंदरियां एवं प्रेम व्यर्थ तथा नीरस हैं।

अध्याय 12 में रस के साथ–साथ नाट्यशास्त्र की संरचना का वर्णन किया गया हैं। इसमें चारो पुरूषार्थो यथा धर्म, अर्थ, काम एवं क्रोध को प्राप्त करने के लिए शब्द एवं अर्थ के महानतम काव्य को जानने के लिए रस का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

राजा भोज को विविध विषयों पर आधारित ग्रंथ रचना का श्रेय दिया जाता हैं लेकिन साहित्यिक आलोचना, काव्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र और विशेषकर, रससिद्धांत अपने विभिन्न रूपों में उनका पसंदीदा विषय प्रतीत होता हैं, जो उनके प्रमुख 2 ग्रंथो यथा श्रृंगारप्रकाश और सरस्वतीकण्ठाभरण से परिलक्षित होता हैं।

''सरस्वतीकण्ठाभरण'' (देवी सरस्वती के गले का आभुषण) संस्कृत व्याकरण और अलंकारशास्त्र (काव्यशास्त्र) पर एक ग्रंथ हैं जो 643 छंदो का एक विस्तृत पाठ हैं, जो 1563 उदाहरणों एवं चित्रों से समृद्ध 05 अध्यायरूपी ग्रंथ हैं।

आचार्य भरतमुनि की तरह राजा भोज संस्कृत भाषा की विशेषताओं पर चर्चा करते हैं, परंतु यह भरतमूनि की तुलना में अधिक विस्तृत रूप से करते हैं, तथा संस्कृत भाषा के आमजन में प्रसार एवं संपूर्ण ज्ञान को सहज बनाने अधिक जोर देते हुए प्रतीत होते हैं, इसके उदाहरणस्वरूप उनके द्वारा स्थापित धारानगरी में स्थापित सरस्वतीसदन (भोजशाला) जहॉ उन्होनें विभिन्न भाषाओं की जननी संस्कृत को मॉ सरस्वती के आलंगन हेतु प्रतिस्थापित किया एवं इसके शिक्षण–प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था कर इसे इतना सहज बना दिया कि, ''खेल–खेल में इसे बालक–बालिकाओं के शिक्षण हेतु ज्ञात चित्रों में संस्कृत की वर्णमाला का अंकन कर सरस्वती सदन में दीवारों पर उकेर दिया गया, जिसके ज्वलंत उदाहरण के रूप में भोजशाला से प्राप्त ''नागबंध चित्र'' हैं (निम्नानुसार) जो दीवार पर अंकित हो नाग आकार के संस्कृत वर्णो की वर्णमाला को प्रदर्शित करता हैं।

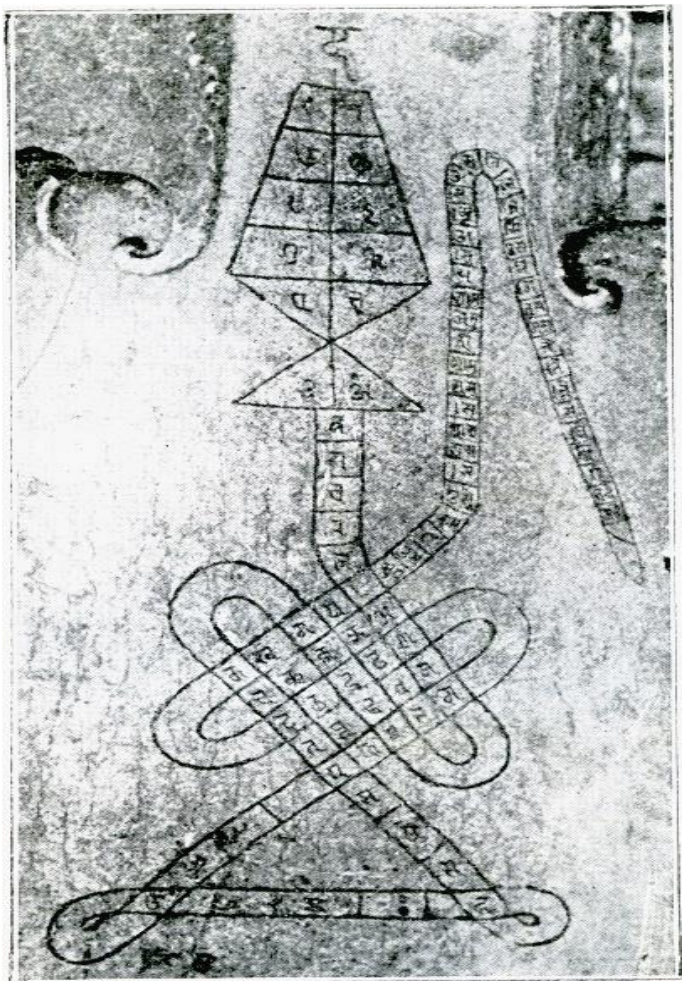

अन्य कृति ''श्रृंगारप्रकाश'' काव्यषास्त्र (अलंकारषास्त्र) और नाट्यषास्त्र से संबंधित हैं। इसे शास्त्रीय संस्कृत साहित्य की संपूर्ण श्रृंखला में साहित्यिक आलोचना एवं सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में सबसे बड़ा ज्ञात कार्य बताया जाता हैं। डॉ राघवन ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि, ''श्रृंगार प्रकाश में जो कुछ भी पाया जाता हैं, वह अन्यत्र भी पाया जाता हैं, और जो इसमें नहीं पाया जाता, वह अन्यत्र भी नहीं पाया जा सकता''। इनके द्वारा राजा भोज ऐसे पहले लेखक प्रतीत होते हैं जिनका साहित्य कार्य हमारे पास उपलब्ध हैं, जिन्होंने दोनो शाखाओं यथा काव्य एवं नाटकीयता पर संयुक्त रूप से कार्य किया हैं।

राजा भोज अपने वर्णन में काव्यशास्त्र में निकटता से संबंधित ''छंदशास्त्र'' को छोड़, नाट्यशास्त्र पर विस्तार से चर्चा करते हैं, साथ ही नाट्यशास्त्र में विभिन्न रसों में से ''श्रृंगार रस'' का उनका विश्लेषण स्वयं में अद्वितीय हैं, साथ ही

अनुठा हो वर्तमान तक प्राप्त पांडुलिपियों एवं साहित्यों में एकमात्र हैं। उन्होंने श्रृंगार का विश्लेषण कर इसके प्रकारों एवं नाटकीय प्रस्तुति में इसकी पात्रों द्वारा अभिव्यक्ति एवं दर्शकों द्वारा ग्राह्य अनुभूति को विस्तार एवं भावपूर्णता से प्रदर्शित किया हैं।

श्रृंगारप्रकाश का मुख्य विषय ''रस–सौंदर्यात्मक आनंद एक सुखद अनुभुति हैं, और इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में होती हैं'' इस कारण भोजकृत ग्रंथ को रस सिद्धांत के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण माना जाता हैं। आचार्य भरतमुनि द्वारा 8 रसों में से 1 रस श्रृंगार रस के रूप में वर्णित किया गया हैं, जिसके अर्थ की परिणति के रूप में वें 'कामुकता या प्रेम की स्थिति' को मानते हैं, वहीं राजा भोज श्रृंगार रस को ''रसों के मुखिया/राजा के रूप'' में प्रदर्शित करते हुए अपने उत्कृष्टतम् रूप में पहुंचानें का अनुपम प्रयास किया हैं साथ ही सभी रसों के मुल रस के रूप में श्रृंगार को वर्णित करते हुए राजा भोज कहते हैं कि, यह सभी रसों के जन्मदाता के रूप में दैदीप्यमान हैं, जो ईष्या, करूणा, भय, क्रोध और निश्चित् रूप से शारीरिक एवं मन की अंर्तरंगता की अभिव्यक्ति रूपी अनगिनत मनोभावों की संभावना को परिणित करते हैं।

राजा भोज ने काव्यशास्त्र (अलंकारशास्त्र) के संबंध में श्रृंगार रस को सर्वोच्चता प्रदान करते हुए इसे ''रसों के सिंहासन पर विराजमान'' किया हैं, उनके अनुसार पाठक/दर्शक जो सहानुभुति संपन्न, सुसंस्कृतवान एवं सुविज्ञ होकर सहृदय एवं मनोभाविक मुद्रा में काव्य/नाटक का रसपान करता हैं, तो ही 'श्रृंगार' रस का रूप धारण कर पाठक/दर्शक का मन मोह लेता हैं। भोज के अनुसार श्रृंगार रस वह रस हैं जिसका अनुभव एवं रसपान संपूर्ण विश्व निरंतर करता रहता हैं।

नृत्य/नाटक विधा हेतु भी सर्वाधिक प्रासंगिकता के रूप में 'श्रृंगार' रस को स्थापित करते हुए राजा भोज कहते हैं कि यह छोटे नाटकों, उपरूपकों के संबंध में विस्तृत विषयवस्तु एवं समझ के विविध आयाम प्रस्तुत करता हैं। भोज 'उपरूपक' का अर्थ प्रकट करते हुए कहते हैं कि यह वे नृत्य संपन्न सुक्ष्म नाटिकाएं जिनमें मधुर संगीत, समृद्ध गीत, प्रेम प्रसंग घटनाओं का रसरूपी व्याख्यान जो नाजुक नृत्य क्रियाओं के प्रदर्शन स्वरूप सुसज्जित किया जाता हैं।

राजा भोज द्वारा 'उपरूपक' के 12 पृथक–पृथक प्रकार वर्णित किए हैं– भाना, हल्लिसाका, श्रीगदिता भनिका, नर्तनाका, गोष्ठि, रासका, प्रेक्षानाका, दुर्मलिका, नाट्यरसका, काव्य एवं प्रस्थान।

1) भाना – राजा भोज ने इसका वर्णन करते हुए कहॉ हैं कि, इसमें नट/नर्तक मंच पर एकमात्र अभिनेता की भूमिका निभाता हैं, और स्वयं से काल्पनिक रूप से वार्तालाप कर नाट्य की विषयवस्तु का प्रदर्शन करता हैं, मानों हवा से बाते कर रहा हों।

2) हल्लिसाका – भोज द्वारा वर्णित हैं कि इस उपरूपक में नाट्य अंतर्गत एक नृत्य की प्रस्तुति दी जाती हैं, जिसमें 8 या 16 नर्तक होते हैं, जो समुह में नृत्य करते हुए गाने की धुन एवं ताल पर लयबद्ध गतिक कदमों से नृत्य का प्रदर्शन करते हैं।

3) श्रीगदिता– भोज द्वारा श्रृंगारप्रकाश में वर्णित इस एकांकी नाटक में नायिका अपने प्रेमी/भगवान के गुणों का वर्णन अपनी सखा से करते हुए विभिन्न मुद्राओं का सहारा लेती हैं, जो कि मनोभावों के प्रदर्शन को अतिमोहक बना देता हैं, एवं रसिक को श्रृंगार के प्रदर्शन की प्रति भावविभोर कर देता हैं।

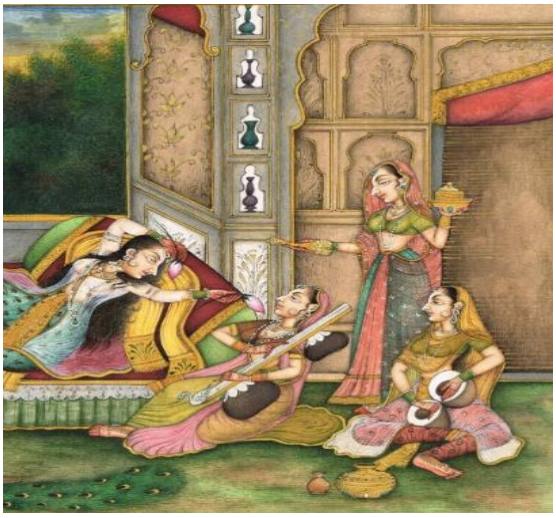

4) भनिका– भोज अनुरूप यह गायन–सहवचन प्रकार का नृत्य हैं, जिसमें नायिका कमर से उपर के भाग को बिना हिलाए इशारों की मुद्रा में कैसिकी शैली में सौम्यता से नृत्य की विषयवस्तु का प्रदर्शन करती हैं।

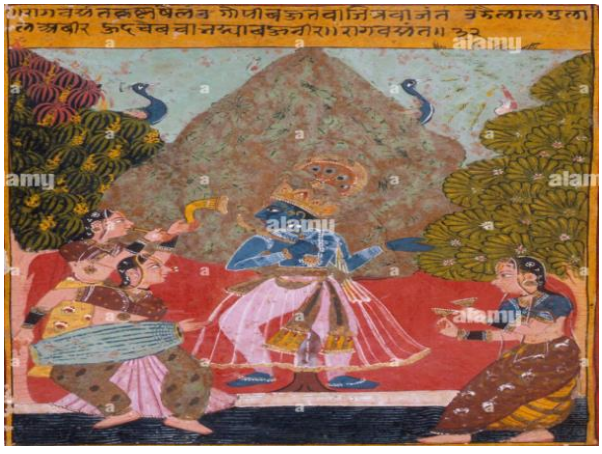

5) नर्तनाका– भोज कहते हैं कि इस उपरूपक में नर्तक भावनाओं को व्यक्त करते हुए बड़े ही नाजुक और सौम्य तरीकों से नृत्य मुद्राओं का प्रदर्शन कर गान करता हैं, यह मुलतः 4 प्रकार की होती हैं – साम्य, लास्य, चालिका एवं द्विपदी।

6) गोष्ठि– भोज ने श्रृंगार प्रकाश में श्रीकृष्ण लीलाओं में से एक लीला जिसमें श्रीकृष्ण ग्वालबालाओं के साथ नृत्य कर रहें हैं में प्रदर्शित मनोभावों तथा आकर्षक मुद्राओं को श्रृंगार रस के माध्यम से प्रदर्शित करने संबंधी उपरूपक के रूप में गोष्ठि को बताया हैं।

7) रासका– राजा भोज के अनुसार यह उपरूपक एकमात्र ऐसा हैं जो नाट्य एवं नृत्य दोनो ही विधाओं में प्रदर्शित हैं, इसमें नर्तक सामूहिक रूप से नृत्य करते हुए नाट्य की विषयवस्तु का प्रदर्शन रंगीन छड़ियों के माध्यम से लयबद्ध तरीके से वृत्त में करते हैं।

8) प्रेक्षानाका– भोज के अनुसार इस नृत्य में कामदहन (काम, इरोस का बलिदान) जैसे चश्में प्रेक्षानक प्रस्तुतियों की विशेषता का वर्णन किया गया हैं, और वह काम–दहन का उदाहरण देकर प्रेक्षानक भावों का भी वर्णन करते हैं। इस नृत्य में नर्तक एवं नर्तकी द्वारा इशारों एवं आंदोलनरूपी मुद्राओं के माध्यम से जोरदार नृत्य प्रदर्शन किया जाता हैं।

9) दुर्मलिका– भोज के अनुसार इस उपरूपक को 'मतल्लिका' कहां गया हैं, इसमें नायक–नायिका के प्रेम–प्रसंग संबंधी घटना, चोरी हुए प्यार या प्रेम साजिश सम्मिलित हैं। जहां एक धोखेबाज प्रेमिका दर्शको को अपने विश्वास में लेकर मुख्य प्रेम के मध्य गुप्त विवरणों को प्रदर्शन विभिन्न मुद्राओं से करती हैं।

10) नाट्यरसका– भोज ने इस उपरूपक को कारकरी नाम दिया हैं, उनके अनुसार इस नृत्य विधा में महिला नर्तकियों द्वारा समुह में वसंत नृत्य के रूप में प्रदर्शन किया गया हैं, जिसमें राग बसंत के गीतों को गाकर तालियां बजाते हुए नृत्य की विभिन्न कलाओं का वर्णन किया जाता हैं।

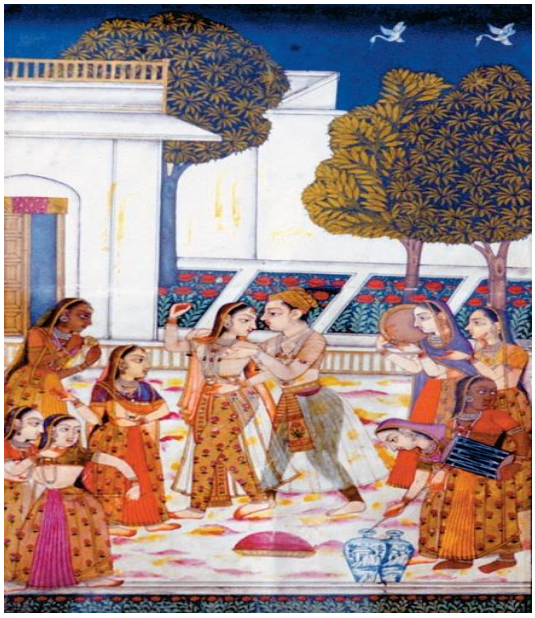

11) काव्य– भोज ने इस राग–काव्य या काव्य के रूप में वर्णित किया हैं, इसमें ताल और लय की किस्मों को नियोजित करते हुए कई रागो को सम्मिलित कर नृत्य प्रस्तुति की गई हैं। इसकी विभिन्न मुद्राओं में ईशारों से वार्तालाप करने की विधा सम्मिलित हैं।

12) प्रस्थान– इस उपरूपक में राजा भोज द्वारा श्रृंगार रस के विभिन्न पहलुओं यथा प्रेम के प्रारंभिक चरण में पहली मुलाकात (प्रथम अनुराग), गलतफहमी (अनुमान), वसंत और जाड़ो के मौसम के माध्यम से प्रेम के विकास का क्रम दर्शाना आदि सम्मिलित हैं।

राजा भोज के अन्य, उपरूपकों के बारे में कई विद्वानों ने विस्तार से वर्णन किया हैं, जिनमें प्रमुख हैं– 1) अभिनवगुप्त (अभिनवभारती) 2) धनंजय (दशरूपक) 3) शरदतनया (भावप्रकाशन) 4) हेमचंद्र (काव्यानुशासन) 5) सागरनंदिन (नाटक–लक्षण, रत्नकोसा) 6) भावमिश्र (भावप्रकाश) 7) विश्वनाथ (साहित्यदर्पण) । इनमें सबसे महत्वपूर्ण विषयवस्तु धनजंय एवं राजा भोज द्वारा ही प्रस्तुत की गई हैं, दोनो ही परमारकाल के विद्वानों में सम्मिलित हैं। राजा भोज इस विधा 'उपरूपक' में 12 प्रकारों का उल्लेख करने वाले एकमात्र विद्वान हैं जिन्होंने इन प्रकारों का प्रतिपादन कर नाट्यशास्त्र में लघुनाटकों की विधा का परिचय करवाया तथा उसमें सर्वाधिक प्रमुख श्रृंगार रस की विविधता एवं महत्ता का प्रदर्शन किया।

राजा भोज ने श्रृंगाररस के विभिन्न चरणों की नाट्य/नृत्य में प्रस्तुति हेतू 'कैसिकी' शैली को महत्वपूर्ण माना हैं, इस शैली में वृत्ति, सौम्य, सुंदर शैली, जो प्रेम, नृत्य और गीत की अभिव्यक्ति के साथ–साथ आकर्षक वेशभुषा और नाजुक कार्य प्रदर्शन के साथ कोमल लस्यांगा की विशेषता प्रदर्शन किया जाता हैं, यह मुख्यतः महिलाओं नर्तकी/नटों द्वारा की जाने वाली श्रृंगार रस की सर्वाधिक मोहक प्रस्तुति हैं।

राजा भोज द्वारा श्रृंगार प्रकाश के 'ग्यारहवें अध्याय' में नाटकों के 24 प्रकार बताते हुए उनकी विस्तृत संरचना का वर्णन बडे ही आकर्षक तरीके से किया हैं। भोज इन्हें रसिक को 'प्रेक्ष्य–प्रबंध', दृश्यात्मक या प्रदर्शित की जाने वाली काव्यात्मक रचनाएँ कहते हैं, साथ ही उन्हें 2 खण्डों में विभाजित करते हैं– 1) नाट्य में वाक्य–अर्थ–अभिनय की आवश्यकता 2) नाट्य में पाद–अर्थ–अभिनय।

यह शब्द मुलतः किसी नाट्क/नृत्य में कलाकार द्वारा वाचिका (वाणी) की मदद से मनोभावों की विभिन्न अवस्थाओं (भावों) को चित्रित/प्रदर्शित करने के लिए ग्राह्य की गई अभिनय तकनीकों से संबंद्ध हैं जैसे – क्रियाएं (अंगिका), भाव–भंगिमा (हस्त–अभिनय) एवं वेशभूषा (अहार्या) आदि। उन्होंने किसी भी नाटक/नृत्य में अंगिका – चेहरे का हावभाव/अंगो की गति का अधिक महत्व बताया हैं, यही रसिक तक नाटक/नृत्य के विषय विशेष मनोभाव रूपी रसों को प्रेषित करने का आधार हैं।

राजा भोज के अनुसार नाट्य अभिनय के दो रूप बताए गए हैं – 1) पदार्थ अभिनय (जब नट द्वारा गीत/नाट्य शब्दों को इशारों और शारीरिक भावों से प्रकट कर रसिक के आभापटल पर चित्रित किया जाता हैं) 2) वाक्यार्थ अभिनय (जहां नट/नर्तक संपूर्ण छंद या वाक्य को अभिनय कर रसिक को मुल रस प्रदान करता हैं)। भोज पदार्थ अभिनय रूपी वर्ग में 12 अन्य प्रकारों का उल्लेख भी करते हैं, जो कि मनोभावों एवं विषय विशेष की प्रस्तुतियों की नाजुकता एवं अभिव्यंजको से पूर्णतः समावेशित हैं।

भोज के इस ग्रंथ में नाट्य के प्रदर्शन हेतु विभिन्न विधाओं बहुत ही सुंदर एवं कलात्मक चित्रण प्रस्तुत किया हैं, जो भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में कम ही पाया जाता हैं, हालांकि भरतमुनि के नाट्य शास्त्र में तथ्यों का अधिक समावेश होकर वह मात्र नाट्य परंपरा को प्रदर्शित करते हैं जबकि राजा भोज न सिर्फ नाट्य परंपरा, अपितू उसकी विधाओं के सरल एवं आकर्षक चित्रण को अंकित करते हुए इसके जन–जन में प्रसार हेतु एक सरल एवं अत्याधिक भावपूर्ण लेख प्रस्तुत करते हैं।